Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.H.D. -24

मध्यकालीन कविता-II

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Sanjay Jain,* M.A. (Hindi), B.Ed.

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 300/-

Content

मध्यकालीन कविता-II

Question Paper—June-2024 (Solved) 1
Question Paper—December-2023 (Solved) 1
Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in July-2022 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

मध्ययुगीनता की अवधारणा

1. मध्ययुगीनता की अवधारणा : रीतिकाल के संदर्भ में 1

2. रीतिकाल संबंधी विविध दृष्टिकोण 14

रहीम और केशव

3. नीतिकाव्य परंपरा और रहीम 25

4. रहीम के काव्य की अंतर्वस्तु, भाषा एवं शिल्प 39

5. रीतिकाव्य परंपरा और केशवदास 51

6. केशवदास : आचार्यत्व एवं कृतित्व 60

7. हिंदी आलोचना में रहीम और केशव 75

मतिराम और देव

8. मतिराम के काव्य की शृंगारिकता 87

9. मतिराम की काव्य-कला 103

10. देव की कविता 113

11. नायिका भेद की परंपरा और देव 128

12. हिंदी आलोचना में मतिराम और देव 146

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

मध्यकालीन कविता–II

M.H.D.-24

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) रहिमन घरिया रहँट की, त्यों आछे की डीठ।
रीतेहि सन्मुख होत है, भरी दिषावै पीठ॥

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत दोहा रहीमदास के नीति के दोहों से उद्धृत है। इसमें शतरंज के उदाहरण द्वारा निकृष्ट प्रकृति के लोगों के ओछे व्यवहार के बारे में बताया है।

व्याख्या–ओछे लोग जब प्रगति करते हैं, तो बहुत ही इतराते हैं। वैसे ही जैसे शतरंज के खेल में जब प्यादा फरजी बन जाता है, तो वह टेढ़ी चाल चलने लगता है।

विशेष–1. दोहा छंद है। 2. नीति का संदेश है। 3. कवि के लोक ज्ञान की झलक है।

(ख) प्रीतम आए प्रभात प्रिया-घर, राति रमैं रति-चिन्ह लिए ही; बैठि रही पलका पर सुंदरि नैन नवायकें, धीर धरें हीं। बाँह गहैं 'मतिराम' कहैं, न रही रिस मसिनी के हठ कें ही; बोली न बोल कछु, सतराम, भौंह चढाय तकी तिरछोंही॥

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत पद मतिराम रचित है। इस पद में कवि ने पति के किसी अन्य स्त्री के पास होकर आने पर पत्नी के धैर्य एवं दुख की स्थिति का वर्णन किया है।

व्याख्या–कवि कहते हैं कि प्रीतम रात भर किसी अन्य स्त्री के साथ प्रेम में व्यस्त था। सुबह जब वह घर आया, तो उसके चेहरे एवं शरीर पर स्त्री के साथ प्रेम के चिह्न दिख रहे थे। यह देखकर उसकी पत्नी अत्यंत दुखी हुई, क्योंकि वह धैर्य रखकर पूरी रात पलकें बिछाए पति की प्रतीक्षा कर रही थी, किंतु यह देखकर भी धैर्यशीला ने न तो पति से कोई हठ किया, न क्रोध दिखाया केवल भौंह तिरछी कर आँखों में आँसू छियाए बैठी रही।

विशेष–1. ब्रज भाषा है। 2. कवित्त छंद है। 3. स्त्री के धैर्य, दुख एवं पति के कपट की सशस्क्त एवं मार्मिक अभिव्यक्ति है।

(ग) दीरघ दरीनि बसैं, केसवदास केसरी ज्यों,
केसरों को देषि बनकरी ज्यों कंवत हैं।
बासर की सम्पदा उलूक ज्यों न चितवत
चकवा ज्यों चंद चितै चौगुनो चंपत हैं।
केका सुनि ब्याल ज्यों बिलात जात घनस्याम
घननि की घोरनि जवासे ज्यों तपत हैं।
भौंर ज्यों भंवत बन जोगी ज्यों जगत निसि
साकत ज्यों स्याम नाम तेरोई जपत है।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत कवित्त केशवदास रचित केशवप्रिया से उद्धृत है। इसमें कवि ने उदाहरणों द्वारा कृष्ण की सखी की पत्री में राधिका को विरह निवेदन भेजा है।

व्याख्या–कृष्ण की सखी की पत्रिका राधा को भेजते समय लिखती है कि जिस प्रकार सिंह गंभीर गहरी गुफाओं में निवास करता है और केसरी (सिंह) को देखकर जिस प्रकार हाथी कांपता है, उसी प्रकार कृष्ण तुम्हारे विरह में विचलित हैं। जिस प्रकार उल्लू दिन की शोभा नहीं देख सकता, वैसे ही ये भी दिन में आँखें मूँदें पड़े रहते हैं। चकवा जिस प्रकार चाँद की चितवन देखकर तड़पता है, उसी प्रकार ये तड़पते हैं। मोर प्रकार काले बादलों को देखकर शोर करता है, उसी प्रकार ये शोर करते हैं। जोगी जिस प्रकार भोर होते भंवरा बनकर घूमता है, उसी प्रकार कृष्ण तुम्हारा नाम दिन-रात जपते हैं।

विशेष–1. कवित्त छंद है। 2. वियोग शृंगार है। 3. ब्रजभाषा है।

(घ) स्याम सरूप घटा ज्यों, अनुपम नीलपटा तन राधै कै झूमै। राधे के अंग के रंग रंग्यो पट, वीजुरी ज्यों घन सो तन भूमै। है प्रतिमूरति दोऊ, दुहू की, किधौं प्रतिबिम्ब वही घट दूमैं॥ एकहि देव दुदेह दुदेहरे देहेर द्वै इक देव दुहू मैं॥

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत पद कवि देव द्वारा रचित देव-सुधा से संकलित है। इसमें राधा-कृष्ण के मुगल स्वरूप का वर्णन है।

व्याख्या–कवि महता है श्याम के समान नीले आकाश में काले बादल देखकर राधा का तन झूमने लगता है। राधा के अंग-अंग में जेसे बिजली उसके वस्त्र को रंगकर शरीर की भूमि में घन अर्थात् कृष्ण उतर रहे हैं। राधा-कृष्ण दोनों की प्रतिमूर्ति मानों एक-दूसरे के प्रतिबिंब में समा रही है। कवि देव यह नहीं समझ पा रहे हैं कि देह दो हैं या एक हैं।

विशेष–1. मीलितोन्मीलित अलंकार है। 2. ब्रजभाषा है। 3. युगल स्वरूप का वर्णन है। 4. संयोग शृंगार है।

प्रश्न 2. राजदरबार के जीवन का रीतिकालीन कविता पर किस प्रकार प्रभाव पड़ा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-5, प्रश्न 2

प्रश्न 3. रीतिकाल के नीति कवियों का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-33, प्रश्न 4

प्रश्न 4. रहीम के काव्य में निहित शिल्पगत वैशिष्ट्य पर विचार कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-46, प्रश्न 4

प्रश्न 5. 'केशवदास को कठिन काव्य का प्रेत कहा जाता है।' आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं? सोदाहरण अपना मत व्यक्त कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-63, प्रश्न 2

प्रश्न 6. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) मध्ययुगीनता की अवधारणा

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'मध्ययुगीनता की अवधारणा'

(ख) कविप्रिया

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-52, 'कविप्रिया'

(ग) मतिराम

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-87, 'पृष्ठभूमि'

(घ) जसवंत सिंह

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-55, 'जसवंत सिंह'

■■

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

मध्यकालीन कविता-II

M.H.D.-24

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) रहिमन वहाँ न जाइए, जहाँ कपट को हेत।
हम तन टारत ढेकुली, सींचत अपनो खेत॥

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत दोहा कवि रहीम द्वारा रचित है। इसमें कवि ने छल-कपट वाली जगह से दूर रहने का संदेश दिया है।

व्याख्या–कवि कहता है कि जिस स्थान पर लोक छल-कपट से अपना मतलब निकालते हैं, ऐसी जगह नहीं जाना चाहिए। हम तो कुएं से ढेकुली की मदद से मेहनत से पानी खींचते हैं, किंतु कपटी व्यक्ति बिना मेहनत के ही अपना खेत सींच लेते हैं।

विशेष-1. नीति का दोहा है। 2. दोहा छंद है। 3. उदाहरण अलंकार है।

(ख) चरण धरत चिंता करत, भावत नींद न भोर।
सुबरन को खोजत फिरत, कवि व्यभिचारी चोर॥

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत दोहा केशवदास द्वारा रचित है। कवि ने एक ही वस्तु के अलग-अलग संदर्भ में अलग-अलग अर्थ बताए हैं।

व्याख्या–सुबरन का अर्थ कवि, व्यभिचारी और चोर तीनों के लिए अलग हैं। कवि के लिए सुबरन का अर्थ सुवर्ण अर्थात् सुंदर शब्द हैं। व्यभिचारी के लिए सुबरन का अर्थ सुंनदर रंग है और चोर के लिए सुबरन का अर्थ स्वर्ण है।

विशेष–1. श्लेष अलंकार है। 2. संदर्भ के अनुसार अर्थ बदल जाता है, यह बताया गया है।

(ग) आसमुद्र के छितीश और जाति को गने।
राजभौन भौज को सबै जने गये बने॥
भाँति-भाँति अन्नपान व्यंजनादि जेवहीं।
देत नारि गारि पूरि भूरि-भूरि भदहीं॥

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत पद कवि केशवदास द्वारा रचित है। इसमें कवि राजभवन के वैभव का वर्णन कर रहा है।

व्याख्या–सागर और धरती के मिलन बिंदु अर्थात् क्षितिज के समान विस्तृत और जाति में गव्य राजमहल में भोज में राजभवन सब लोग बन-ठनकर गए हैं। वहाँ भांति-भांति के व्यंजनों का आनंद ले रहे हैं। नर-नारी सभी आतिथ्य की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे हैं।

विशेष-1. उल्लास का वातावरण है। 2. सुंदर चित्रण है। 3. भाषा ब्रज है।

(घ) लसत गूजरी ऊज री बिलसत लाल इजार।
हियै हजारिन के हरै बैठी बाल बजार॥
जाकें अपने रूप को अति ही होय गुमान।

उत्तर–संदर्भ–प्रस्तुत छंद मतिराम द्वारा रचित है। इसमें सुंदर नारी के सजधज कर अपने सौंदर्य पर गुमान का चित्रण है।

व्याख्या–सुंदर नायिका ने लाल वस्त्र पहनकर आनंद पा रही है। वह लोगों के हृदय को लुभाने के लिए बाजार में बैठी है। उसे लोगों की दृष्टि से स्वयं के सौंदर्य पर अभिमान हो रहा है।

विशेष-1. नारी सुलभ व्यवहार का वर्णन है। 2. अनुप्रास अलंकार है। 3. शृंगार रस है।

प्रश्न 2. केशवदास के काव्य-सौष्ठव पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-66, प्रश्न 4

प्रश्न 3. मतिराम की नायिका-भेद संबंधी विशेषताएँ निरूपित कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-93, प्रश्न 5

प्रश्न 4. देव की कविता में वर्णित शृंगारेतर विषयों का संक्षिप्त विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-119, प्रश्न 2

प्रश्न 5. आचार्य रामचंद्र शुक्ल के पूर्व के इतिहास ग्रंथों द्वारा रीतिकाव्य को समझने के प्रयासों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-16, प्रश्न 1

प्रश्न 6. निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) नीतिकाव्य परम्परा में रहीम

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-27, 'नीतिकाव्य परंपरा में रहीम का स्थान'

(ख) कविप्रिया

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-52, 'कविप्रिया'

(ग) केशवदास का आचार्यत्व

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-60, 'केशवदास आचार्यत्व'

(घ) देव का काव्य-सौष्ठव

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-116, 'अभिव्यंजना पक्ष'

■■

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

मध्यकालीन कविता-II

मध्ययुगीनता की अवधारणा

मध्ययुगीनता की अवधारणा : रीतिकाल के संदर्भ में

1

परिचय

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने रीतिकाल का समय संवत् 1700 से 1900 अर्थात् (1643 ई. से 1843 ई.) तक निर्धारित किया है। इस समय तक भारत में मुगल साम्राज्य स्थापित हो चुका था, इसलिए हिंदी कविता पर भी फारसी भाषा का भी प्रभाव दिखाई देता है। हालांकि भक्ति का प्रभाव भी इस काल में दिखाई पड़ता है, परंतु रीति ग्रंथों का निर्माण भी जारी रहा। प्राय: लोग इसे हिंदू राज, मुस्लिम शासन एवं ईसाई शासन के रूप में भी जानते हैं। इटली के पुनर्जागरण से आधुनिक युग की शुरुआत मानी जाती है। यह उत्तर आधुनिक काल तक चला आया।

आचार्य हजारीप्रसाद हिंदी साहित्य को मध्य युग से आरंभ मानते हैं। आदिकाल भी भारतीय इतिहास के मध्यकाल का भाग है। चौदहवीं से अठारहवीं शताब्दी भक्तिकाल के अंतर्गत मानी जाती है, जिसका हिंदी साहित्य में अपना एक विशेष स्थान है, जबकि डॉ. रामविलास शर्मा 12वीं शताब्दी को पूंजीवाद काल घोषित करते हैं। देखा जाए तो यह समय आधुनिक काल में आता है। अत: रीतिकाल भी आधुनिक काल के भीतर आता है।

अध्याय का विहंगावलोकन

मध्ययुगीनता की अवधारणा

देखा जाए तो मध्ययुग और मध्ययुगीनता में अंतर पाया जाता है। मध्ययुग कालवाचक कहलाता है, जबकि मध्ययुगीनता एक मनोवृत्ति है और यह एक विचार-दृष्टि मानी जाती है। कुछ विचारक मध्य युग को आधुनिक काल से पूर्व और प्राचीन काल के बाद का समय मानते हैं।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने स्पष्ट करते हुए कहा है, "मध्ययुग या मध्यकाल शब्द भारतीय भाषाओं में नया ही है। आजकल इसका प्रयोग एक ऐसे काल के अर्थ में होने लगता है, जिसमें सामूहिक रूप से मनुष्य एक जब दी हुई स्तब्ध मनोवृत्ति का शिकार हो जाता है।" प्राचीनकाल के विचारकों का मानना था कि वे कुछ 'नया' बता रहे हैं। आधुनिक चिंतकों ने भी सृष्टि के रहस्यों पर प्रकाश डाला। भारतीय हो या यूरोपीय मध्ययुग के चिंतक, विचारक, लेखक यह मानते थे कि हम कुछ नया कहने की स्थिति में नहीं है। हम केवल शास्त्रों से संगति बिठाने का कार्य अच्छी प्रकार कर सकते हैं।

मध्यकाल में यह स्पष्ट हो गया कि सारा ज्ञान वेदों में समाहित है। यह सत्य है कि सभी के लिए वेदों का सुगम कार्य नहीं है, इसलिए प्राचीनकाल में पांचवें वेद भरत के 'नाट्यशास्त्र' की रचना हुई। शंकुक तथा अभिनवगुप्त ने भी इस सूत्र की व्याख्या की। तुलसीदास जी ने 'रामचरितमानस' की रचना की, जबकि कबीरदास अपनी आँखों देखी का वर्णन कर रहे हैं।

अत: आधुनिकता और मध्ययुगीनता की तुलना करें, तो हम कह सकते हैं कि 'सप्रश्न दृष्टि' आधुनिकता है। आधुनिकता सभी स्वीकृत सिद्धांतों, आप्त वचनों, शास्त्रों और विचारों पर संदेह करते हुए उन्हें प्रश्नसूचक दृष्टि से देखती है, जबकि मध्ययुगीन आप्त वचनों पर विश्वास करती है। पुराने समय से ही भारतीय दर्शन और चिंतन में चाहे जितने मतभेद हो, परंतु दोनों विरोधी इस बात पर एकमत हैं, वह है, कर्मफल की धारणा और दूसरा पुनर्जन्म की धारणा। मनुष्य को कर्मानुसार फल जरूर मिलता है। पुनर्जन्म की इन धारणाओं के कारण भारतीय समाज में विद्रोह नहीं आता। यह बात भी पुनर्जन्म में मानी जाती है कि 84 लाख योनियों में मानव श्रेष्ठ है, इसलिए भक्तिकाल के कवि यह कामना करते हैं कि जन्म-मरण के इस बंधन से मुक्ति मिले। मध्यकालीन जीवन स्तर चिंतन को छोड़कर सामाजिक जीवन में भी व्यवस्थित हो चुका था। वर्णाश्रम व्यवस्था कब प्रारंभ हुई। इसकी कोई जानकारी प्राप्त नहीं है। हाँ, इसके भीतर ही जाति प्रथा का विकास हो गया था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र चार वर्ण माने गए थे। मनुष्य की आयु सौ वर्ष मानी जाती थी। इसके आधार पर ही ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम बनाए गए। वर्णसंकर जातियों को कोई सम्मान प्राप्त न था।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

वर्णाश्रम व्यवस्था में व्यक्ति का न तो विजातीय विवाह हो सकता था, न ही वह अपने पेशे को परिवर्तित कर सकता था। शूद्र वेदों का अध्ययन नहीं कर सकता था। वेद चार माने माने जाते थे–ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। इसी प्रकार छह वेदांग हैं। ये वेद तो नहीं थे, पर वेद के अंग हैं। वेदों को भली भाँति समझने के लिए इन वेदांगों का अध्ययन किया जाना जरूरी है। ये हैं–ध्वनि शास्त्र (शिक्षा), अनुष्ठान (कल्प), व्याकरण, व्युत्पत्ति (निरुक्त), छंद और खगोलशास्त्र (ज्योतिष)। इनके अतिरिक्त 18 पुराण हैं। भक्त कवि स्वर्ग-नरक में विश्वास करते थे, उनका अलौकिक सत्ता में भी अटल विश्वास था।

रीतिकाल में तो काम को प्रमुखता देना प्रारंभ हो गया। इस काल के कवियों के लिए धार्मिक ग्रंथ त्याज्य तो नहीं थे, पर महत्त्वपूर्ण नहीं रह गए थे। सभी रसराज शृंगार रस का भोग करते थे। यह परंपरा संस्कृत से हिंदी में आई थी। संस्कृत का अलंकृत काव्य इन कवियों का आदर्शमात्र था। रीतिकाल में कवियों के देवता कामदेव थे। इन कवियों की रुचि धार्मिक ना होकर बदल गई थी। मध्ययुगीनता के भीतर इनका भी साहित्य आता है। परवर्ती संस्कृत काव्य से लेकर भक्तिकाल और रीतिकाल में प्रवाहित होता रहा।

रीतिकाल का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

मुगल साम्राज्य के स्थायित्व के पश्चात् से रीतिकाल प्रारंभ हुआ। जब मुगल शासन निर्बल हो गया और उसके बादशाह जल्दी-जल्दी परिवर्तित होने लगे, तो स्थानीय शक्तियों का उदय हुआ। मराठों और अकाली आंदोलनों के फलस्वरूप मुगल शासन निर्बल पड़ गया। 1857 में बहादुरशाह जफर के शासन का अंत हो गया। इसके बाद शक्तिशाली सामंतों का उदय हुआ। इनके राजदरबारों में भी कवियों का होना जरूरी था। प्राचीन भारतीय साहित्य और संस्कृत के जानकार विद्वानों का मत है कि राजसभा में सात अंग होने चाहिए। इनमें ये अंग हैं–विद्वान, कवि, भाट, गायक, मसखरे, इतिहासज्ञ और पुराणज्ञ। राजा भोज के दरबार में नौ महान विभूतियाँ थीं। इसी तर्ज पर अकबर के नौ रत्न प्रसिद्ध थे। वे थे–अबुदल फजल, टोडरमल, तानसेन, मानसिंह, अब्दुल रहीम खानखाना, मुल्ला दो प्याजा, हकीम हमाम और दरबारी कवि फैजी। कहने का अभिप्राय यह है कि भक्तिकाल के समाप्त होते-होते कुलीन वर्ग में इन दरबारी कवियों का महत्त्व अधिक हो गया।

लक्षण ग्रंथ

आचार्य द्विवेदी के मतानुसार रीतिकाल के कवियों के तीन मूल प्रेरणा स्रोत थे–

1. विभिन्न प्रकार की प्रेम क्रीड़ाओं को प्रदर्शित करने वाले कामशास्त्र।

2. भक्ति वैचित्र्य का विवेचन करने वाले अलंकार शास्त्र।

3. नायक-नायिका के विभिन्न भेदों और स्वभावों का विवेचन करने वाले रस शास्त्र।

इस समय के कवियों ने लक्षण ग्रंथों की रचना अधिक की। इनमें काव्य के विविध अवयवों की शिक्षा दी जाती थी। इस कार्य में कोई मौलिक सिद्धांत नहीं बना था।

आचार्य शुक्ल जी के अनुसार नायिका भेद का विवेचन सर्वप्रथम 'हिततरंगिणी' में किया था। इसके बाद केशवदास ने काव्य के लक्षणों का विवेचन अपने दो ग्रंथों–'कविप्रिया' और 'रसिकप्रिया' में किया। 'रसमंजरी' में नंददास ने नायिकाओं के भेद व्यक्त किए। आचार्य शुक्ल के अनुसार रीति ग्रंथों की अखंड परंपरा चिंतामणि से चली। अत: रीतिकाल की शुरुआत उन्हीं से मानी जानी चाहिए। रीतिकाव्य के आलोचकों का मत है कि हिंदी के लक्षण ग्रंथाकर्त्ता मूलत: कवि थे। वे चिंतक बिल्कुल नहीं थे। शुक्ल जी का मानना है कि इन कवियों की रचनाएँ संस्कृत कवियों से श्रेष्ठ हैं। द्विवेदी जी रातिकाल के काव्य को भी संस्कृत काव्य के मुक्तक 'अलंकृत काव्य' की श्रेणी या वर्ग में रखते हैं।

कविता का उद्देश्य

कविता लिखने के पीछे कोई-न-कोई उद्देश्य अवश्य होता है। रीतिकालीन कविता की बात करें, तो इस समय के कवि कविता से धन की प्राप्ति चाहते थे। ये कविताएँ ही उनकी आजीविका का एकमात्र सहारा थीं। उदाहरण के लिए, कवि बिहारी को एक दोहे के लिए एक अशर्फी प्राप्त होती थी।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कवियों के आश्रयदाताओं का भी वर्णन किया है। सूदन राजा सूरजमल के यहाँ रहते थे। द्विजदेव अयोध्या के महाराज के आश्रित थे। पद्माकर भट्ट कई राजाओं के दरबार में गए। देव अनेक रईसों के आश्रय में रहे। भूषण कवि कई जगहों पर भटकने के पश्चात् अंत में छत्रसाल और शिवाजी के आश्रय में रहे। ऐसे कई कवियों के उदाहरण मिलते हैं। वास्तव में उस समय हिंदी में एक मुहावरा प्रचलित हुआ–ठकुरसुहाती कहना अर्थात् ऐसी बात कहना जो ठाकुर को अच्छी लगे। उस समय वही कविता अच्छी मानी जाती थी, जो कवियों के आश्रयदाताओं को पसंद आने के साथ-साथ सभी दरबारियों को भी पसंद आए और जिसे वाह-वाही की प्राप्ति होती। दरबार में प्राय: प्रौढ़ और युवा पुरुष ही बैठा करते थे, जिनकी अभिरुचि शृंगार रस में रहा करती थी। इस रीतिकाल में जितनी भी कविताएँ लिखी गईं, उनमें स्त्री 'पदार्थ' है, 'विषय' है, वह 'सहृदय' नहीं है। इस समय यह माना जाता था कि यदि आप लक्षण ग्रंथ पढ़ रहे हैं, तो आप आसानी से कविता बना सकते थे। अत: उसे कविता सिर्फ आत्म अभिव्यक्ति नहीं, निर्वैयक्तिक कारीगरी है।

रीतिकालीन कविता में पाठक न होकर श्रोता हुआ करते थे। कवि ने कल जो कविता सुनाई, उसे याद रखने की जरूरत नहीं होती थी आज जो कविता सुनाई है, उसे याद रखने की आवश्यकता होती थी। इसीलिए देव, बिहारी, घनानंद, मतिराम ने मुक्तक रचनाएँ की हैं। रीतिकाल की कविता युवावस्था की और

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

श्रृंगार रस की कविता है। इसका पसंद किया जाने वाला विषय नायिका भेद है। इस काल का नायक अपनी नायिकाओं से सहमति प्राप्त कर प्रेमालाप करता है। इस काल में नायकों की दृष्टि में स्त्री भोग की वस्तु है। उसका अपना कोई मानवीय अस्तित्व नहीं है।

कुछ आलोचकों का यह कहना है कि बिहारी रीतिकालीन काव्य 'सामंती अभिजात्य' के कवि हैं। सारा नायिका-भेदी काव्य पुरुष दृष्टि का काव्य है। स्त्रियाँ अपने आपको प्रस्तुत करने के लिए सजती-सँवरती रहती हैं। सामंती समाज को रिझाने में ही उनकी सार्थकता है।

भारत में प्राचीन समय में बहुविवाह प्रथा प्रचलित थी। धीरे-धीरे यह प्रथा समाप्त हो गई। सामान्य गृहस्थ के सामने एक पति एक पत्नी का आदर्श था, फिर भी राजा लोग बहुविवाह किया करते थे। मुस्लिम शासन के समय तो 'हरम' की व्यवस्था थी। राजा को यदि कोई स्त्री पसंद आती, तो उसे पकड़कर हरम में रखा जाता था।

इस काल में बहुपत्नी होने के कारण स्त्री द्वारा पतियों को अपने वश में रखने की बात थी। जायसी के 'पद्मावत' में भी सौतिया डाह के कई उदाहरण हैं। अत: रीतिकालीन साहित्य स्त्री-पुरुष के यौन संबंधों के इर्द-गिर्द घूमता दिखाई पड़ता है।

नायक-नायिका भेद

रीतिकाल के कवि की दृष्टि से यदि हम देखें तो पत्नी भी पत्नी न होकर एक नायिका ही होती है, जिसे 'स्वकीया' कहा जाता है। दूसरे के स्त्री परकीया होती है। रीतिकाल के कवियों के नायिक भेद का परिप्रेक्ष्य मध्ययुगीन है।

इस परंपरा के तीन स्रोत हैं–काव्यशास्त्र, इसकी शुरुआत भरत के 'नाट्यशास्त्र', से मानी जा सकती है। दूसरा है–कामशास्त्रीय ग्रंथ। तीसरा है–कृष्ण भक्तिकाव्य परंपरा। इसके अनुसार कृष्ण एक हैं एवं उनकी भांति-भांति की बहुत सारी गोपियाँ हैं। उनके स्वभाव की चर्चा की है। जगदीश गुप्त के अनुसार देव ने नायिकाओं के 384 भेद किए हैं।

संस्कृत काव्यशास्त्र में श्रृंगार रस का आलंबन विभाव नायक होता है। जो नायक नायिका को खुश रखता है, वह उत्तम नायक तथा जो नायिका को अप्रसन्न करता है, वह मध्यम तथा जो नायिका की उपेक्षा करता है, अधम नायक कहलाता है। किसी ने मानी, चतुर, अनभिज्ञ और प्रेषित के रूप में नायकों को वर्गीकृत किया है।

जहाँ तक नायिकाओं के भेद का संबंध है, वे हैं–स्वकीया, परकीया, सामान्या।

नायिकाओं को पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी और रतिरहस्य में वर्गीकृत किया है। काव्यशास्त्र में स्वकीया नायिका को आयु के अनुसार मुग्धा, मध्या और प्रगल्भा के रूप में विभाजित किया है। भानुदत्त ने भी मुग्धा के दो भेद किए हैं–अज्ञात यौवना, ज्ञात यौवना।

कुछ आचार्यों ने आयु के अनुसार से नायिकाओं का विभाजन किया हैं–देवी, देव गंधर्वी, गंधर्व मानवी, मानुषी।

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं, रीतिकाव्य शारीरिक सुख की मादक कल्पना का साहित्य है। कभी विभिन्न नायिकाओं के द्वारा इस कल्पना को वाणी देते हैं। यह सुख जैविक है। नायिका और नायक दोनों ही जैविक इकाई हैं।

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1. रीतिकालीन काव्य की मध्ययुगीनता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–वास्तव में मध्ययुग और मध्ययुगीनता में अंतर है। मध्ययुग कालवाचक है, किंतु मध्ययुगीनता देखा जाए तो एक मनोवृत्ति और विचारदृष्टि है।

कुछ विचारकों के मतानुसार मध्ययुग से अभिप्राय आधुनिक काल से पहले का तथा प्राचीन काल के बाद का काल है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने मध्यकालीनता को स्पष्ट करते हुए कहा है कि उनका मध्ययुग या मध्यकाल का शब्द भारतीय भाषाओं में बिल्कुल नूतन है। आजकल इस शब्द का प्रयोग एक ऐसे काल के अर्थ में होने लगा है, जिसमें सामूहिक रूप से मनुष्य एक जबदी हुई स्तब्ध मनोवृत्ति का शिकार हो जाता है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने दार्शनिक ग्रंथों का अध्ययन किया और 'स्तब्ध' और 'जबदी' हुई मनोवृत्ति का विश्लेषण भी किया। पुराने समय के विचारकों का मत का था, जो बात पहले किसी के नहीं कहीं, उसे नए रूप में कह रहे हैं। इसी भांति आधुनिक चिंतकों ने भी सृष्टि के रहस्यों की नई व्याख्या की। पुनर्जागरण काल के विचारों के अनुसार अरस्तु बहुत ही महान थे। उन्होंने अनेक मौलिक बातें प्रस्तुत कीं, परंतु यही तर्क ही काफी नहीं है। भारतीय हो या यूरोपीय मध्ययुग के चिंतक, विचारकों और लेखकों का मानना था कि सभी ज्ञान की बातें अतीत में पहले की जा चुकी हैं। इसमें कुछ भी नया नहीं है हम केवल पुराने ग्रंथों को समझ और समझा सकते हैं। उनकी टीकाएँ कर सकते हैं।

मध्यकाल में यह बात कहीं गई थी कि सारा ज्ञान वेदों में निहित है। प्रत्येक तर्क का यदि हम प्रमाण देना चाहें, तो उसका आधार वेद हैं। सभी व्यक्तियों के लिए वेदों को पढ़ना तो कोई सुगम कार्य नहीं है। ऐसे व्यक्ति जो वेद नहीं पढ़ सकते, तो उनके लिए क्या पठन सामग्री होगी?

प्राचीन काल में ही पाँचवें वेद की रचना हो गई। अब प्रश्न उठता है कि 'महाभारत' पांचवां वेद है अथवा भरत के 'नाट्यशास्त्र' को पांचवां वेद स्वीकार किया जाए। उदाहरणार्थ भरत ने 'रससूत्र' की रचना की थी, जिसकी परवर्ती चिंतकों ने आलंबन व्याख्या की।

भट्ट लोल्लट के अनुसार स्थायी भाव ही रस है। शंकुक ने भी व्याख्या करते हुए कहा है कि रस अनुमिति होता है। रससूत्र की व्याख्या तो अभिनवगुप्त भी की है। उनके अनुसार रस स्थायी विलक्षण होता है। स्थायी भाव काव्य में होता है, जबकि रस की उपस्थिति सहृदय के चित्त में होती है। अत: हम कह सकते हैं

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

कि रस की अनुभूति आनंदात्मक होती है। रस के सभी व्याख्याओं ने भरत के मत को आधार बनाकर ही अपना मत समझाया है।

इस मानसिकता को यदि महाकवि तुलसीरास के अनुसार देखा जाए तो हम पाते हैं कि 'रामचरितमानस' की रचना करने वाले तुलसीदास जी की यह मौलिक रचना थी, किंतु तुलसीदास जी का यही कहना था वे नाना पुराण निगमागमों के आधार पर ही उसकी रचना कर रहे हैं।

दूसरी तरफ कबीरदास जी हैं, जो समाज और जगत में आंखों देखी बातों का उल्लेख कर रहे हैं। यह इन दोनों कवियों को मध्ययुगीनता बोध के भीतर ही रखती है।

आधुनिकता और मध्ययुगीनता का तुलनात्मक अध्ययन करें, तो 'सप्रश्न दृष्टि' ही आधुनिकता प्रतीत होगी। आज का आधुनिक युग सभी मान्य सिद्धांतों, शास्त्रों और विचारों तथा आप्त वचनों पर संदेह करता है और प्रश्नसूचक दृष्टि से देखता है, जबकि इसकी तुलना में मध्ययुगीनता में जो है, उसे सही माना गया है। शास्त्रों में जो कहा गया है, उसे ही सत्य माना है। आप्त वचनों में विश्वास दिखाया गया है। इसके अनुसार इन सब पर अविश्वास दिखाना यानी पाप का भागी बनना है।

हमने यह भी देखा कि मध्यकाल का कोई कवि ज्वलंत प्रश्न उठाता है, तो उसे हम आधुनिक कवि कहकर पुकारने लगते हैं। इसका ताजा उदाहरण कबीरदास जी हैं, जो अपने प्रश्नों की वजह से आधुनिक लगते हैं।

पुराने समय से ही भारतीय दर्शन और चिंतन पर सहमति बनी हुई है। बेशक इनमें मतभेद भी है। परतु दोनों विरोधी भी कर्मफल और पुनर्जन्म की धारणा पर एकमत होते दिखाई पड़ते है। इनके अनुसार मनुष्य जो कर्म करता है। उसका फल अवश्य प्राप्त होता है, यदि उस व्यक्ति को उस समय वह फल प्राप्त नहीं हुआ, तो बाद में प्राप्त होगा। कई बार कष्टों के आने पर इसकी जिम्मेदारी पूर्वजन्म के कर्मों के फल पर डाल दी जाती है। इससे भारतीय समाज में किसी प्रकार का विद्रोह होता दिखाई नहीं पड़ता। कबीरदास और महाकवि तुलसीदास की दार्शनिक वैचारिक मान्यताओं में चाहे भेद देखा जाता है, फिर भी इन दोनों मान्यताओं पर ये सभी कवि एकमत हैं।

हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार, "मध्यकालीन भारतीय मनीषा जगत के सामंजस्य विधान में संदेह नहीं करती। वह सर्वोपरि है।" पुनर्जन्म की धारणा के अनुसार मध्य युग में भी यह बात स्वीकार की गई थी कि 84 लाख योनियों में मानव योनि सबसे उत्तम तथा श्रेष्ठ है। मानव कई योनियों में भटकने के पश्चात् मानव देह को पाता है। इसे प्राप्त करने के लिए मानव को पुण्य के कार्य करने चाहिए और भगवान की भक्ति के साथ-साथ मुक्ति के उपाय भी करने चाहिए, भक्तिकालीन कवियों का मानना था कि जो व्यक्ति अज्ञानी और नादान है, वे इसे 'काम का कीड़ा' बुलाते हैं। रीतिकाल के अनुसार ऐसा व्यक्ति 'रसिक' माना जाता है। भक्तिकालीन कवियों का मानना है कि परमात्मा की भक्ति करके मानव इस जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

मध्यकालीन जीवन चिंतन के स्तर के साथ सामाजिक जीवन में भी व्यवस्थित हुआ था। वर्णाश्रम व्यवस्था का प्रारंभ हुई, इसके बारे में कोई सटीक जानकारी उपलब्ध नहीं है। इसी से ही वर्ण व्यवस्था का विकास हुआ, जिनमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र थे। मानव की आयु की कल्पना 100 वर्ष आँकी गई। इसी आधार पर चार आश्रम–ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और संन्यास आश्रम बनाए गए। वर्णाश्रम और जाति प्रथा के दो सिद्धांतों को मान्यता मिल चुकी थी, कोई व्यक्ति सिर्फ अपनी जाति में ही विवाह कर सकता था। इन नियमों का उल्लघंन करने पर उसे सज़ा मिलती थी। यदि व्यक्ति दूसरी जाति में विवाह करता, तो उसे समाज या जाति से बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता। उनसे उत्पन्न संतान से बाद में उसकी नई जाति बन जाया करती थी। इस व्यवस्था में बाद में इतनी ढील दे दी गई, जिसमें स्त्री-पुरुष अन्य जाति में रिश्ते तो रख सकते थे, परंतु विवाह नहीं हो सकता था। इसके अतिरिक्त वर्णाश्रम व्यवस्था के अंतर्गत कोई व्यक्ति अपने व्यवसाय में परिवर्तन नहीं कर सकता था। शूद्र वेदों का अध्ययन नहीं कर सकते थे। वेदों का विरोध इस पूरे दौर में हुआ। वेद प्रमाण हैं इस बात को सभी नहीं मानते थे। वेद चार थे–ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। इसी प्रकार वेदों की तरह छह वेदांग हैं। ये वेदों के अंग कहलाते हैं। ये हैं–ध्वनि शास्त्र, अनुष्ठान, व्याकरण, व्युत्पत्ति, छंद और खगोलशास्त्र। इनके अतिरिक्त वैदिक परंपरा में देखे तो ब्राह्मण ग्रंथ और 18 पुराण भी हैं।

उत्तर वैदिक काल में बौद्ध मत, नाथ संप्रदाय, सिद्ध जिसके 84 सिद्ध मान्य हैं, जैन धर्म, कापालिक, शाक्त योग, सहज साधकों का वर्णन मिलता है। मध्यकाल में भी ये परंपराएँ चलती रहीं। भक्तिकाल के कवियों का ईश्वर में अटूट विश्वास रहा। ये देवता, मंदिर, उपासना पद्धति, तीर्थाटन, स्वर्ग-नरक में विश्वास किया करते थे। बहुत कम विचारक रहे, जो इन मान्यताओं को सप्रश्न दृष्टि से देखते थे। सबका उस परमात्मा में विश्वास समाया हुआ था। उदाहरणार्थ, मीरा श्रीकृष्ण की भक्त थी। उन्हें भी कृष्ण कभी नहीं मिले, पर उनके होने पर उनकी दृढ़ आस्था थी।

पूर्व मध्यकाल की इन मान्यताओं को उत्तर मध्यकाल में भी किसी ने किसी प्रकार की चुनौती नहीं दी गई। रीतिकाल में 'काम' को प्रमुखता दी जाने लगी। कवियों के लिए वेद आदरणीय तो थे, पर अब अधिक महत्त्व नहीं रखते थे, रीतिकाल में कवियों ने युवावस्था एवं शारीरिक आकर्षण पर बल दिया। वे सोचते थे वृद्धावस्था में ईश्वर को याद कर लेंगे।

संस्कृत का अलंकृत काव्य इन कवियों का आदर्श स्वरूप था। इसका वर्णन और विवेचन करते हुए आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com